Date ___/___/_____ Page No.: 1

Date :- 22/04/2020	Degree Part-I (Hons.)
Content Writer :-	Content of the Paper :-
Dr. Abhay Kumar Pathak	Micro Economics
Dept. of Economics,	Paper - I
Marwari College,	Module :- 3
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC :- COST-OUTPUT RELATIONSHIP IN SHORT PERIOD
(अल्पकाल में लागत-उत्पादन संबंध)

Scanned with CamScanner

किसी वस्तु की पूर्ति उसके पीछे छिपी हुई उत्पादन लागत से प्रभावित होता है। जब कोई विक्रेता बाजार में किसी वस्तु की पूर्ति करता है तो उस वस्तु के मात्रा का निर्धारण विक्रेता द्वारा उसके उत्पादन लागत को ध्यान में रखकर किया जाता है। प्रत्येक फर्म किसी वस्तु का उत्पादन करने के लिए उत्पादन के साधनों का प्रयोग करती है। उत्पादन के साधनों का प्रयोग करने के लिए जो धन राशि व्यय करनी पड़ती है, उसे उत्पादन लागत कहते हैं। उत्पादन लागत मुख्य रूप से उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करती है। साधारणतया उत्पादन के बढ़ने पर उत्पादन लागत बढ़ती है। अतः यह कहा जाता है कि उत्पादन लागत उत्पादन की मात्रा का फलन होता है।

उत्पादन लागत का उत्पादन के मात्रा के साथ संबंध को दो श्रेणियों यथा अल्पकाल में लागत-उत्पादन संबंध एवं दीर्घकाल में लागत-उत्पादन संबंध के अंतर्गत किया जाता है।

अल्पकाल में लागत-उत्पादन संबंध :-

अल्पकाल वह अवधि है जिसमें उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन केवल परिवर्तनशील साधनों की सहायता से किया जा सकता है परन्तु फर्म के स्थिर प्लान्ट की क्षमता या आकार में परिवर्तन करना संभव नहीं होता। अतः अल्पकाल में उत्पादन की मात्रा में वृद्धि करने के लिए कुछ लागतें स्थिर रहती है जबकि कुछ लागतें परिवर्तनशील रहती है। अल्पकाल में लागत-उत्पादन संबंधों का विश्लेषण औसत स्थिर लागत, औसत परिवर्तनशील लागत, औसत कुल लागत तथा सीमान्त लागत के संदर्भ में किया जाता है।

(1) कुल लागत :- किसी दी हुयी उत्पादन मात्रा को

उत्पादन करने में जो व्यय होता है, उसे कुल लागत कहते हैं। कुल लागत के अंतर्गत निम्नांकित दो लागतों का विश्लेषण किया जाता है :-

(a) स्थिर या पूरक लागत :-

स्थिर या पूरक लागत से तात्पर्य उन लागतों से है जिनको प्रत्येक अवस्था में व्यय करना पड़ता है चाहे उत्पादन की क्रिया बन्द हो या चालू, अधिक हो या कम। स्थिर लागत उत्पादन के आकार के साथ नहीं बदलती।

(b) परिवर्तनशील अथवा प्रमुख लागत :-

परिवर्तनशील अथवा प्रमुख लागत उत्पादन की मात्रा के साथ परिवर्तित होते रहता है। परिवर्तनशील लागत के अंतर्गत मुख्य रूप से श्रमिकों की मजदूरी, कच्चा माल, ईंधन तथा शक्ति को शामिल किया जाता है। परिवर्तनशील लागत की वृद्धि दर उत्पत्ति के नियमों से प्रभावित होती है।

(II) औसत लागत या इकाई लागत :-

अल्पकाल में औसत लागत के मुख्य रूप से दो घटक हैं। पहला, औसत स्थिर लागत तथा दूसरा औसत परिवर्तनशील लागत। इन दोनों लागतों को हम निम्नांकित रूप से विश्लेषण कर सकते हैं :-

(a) औसत स्थिर लागत :-

कुल स्थिर लागत को जब वस्तु के कुल उत्पादित इकाईयों से भाग दिया जाता है तो औसत स्थिर लागत प्राप्त होता है। चूँकि कुल स्थिर लागत सदैव समान रहती है इसलिए जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता जाता है वैसे-वैसे औसत स्थिर लागत कम होती जाती है, परन्तु यह कभी शून्य नहीं होती है।

Scanned with CamScanner

(ii) औसत परिवर्तनशील लागत :— कुल परिवर्तनशील लागत में कुल उत्पादित वस्तु की इकाईयों से भाग दिया जाता है तो औसत परिवर्तनशील लागत की प्राप्ति होती है।

(iii) सीमान्त लागत :— एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने में कुल लागत में होनेवाली वृद्धि को सीमान्त लागत कहते हैं। मूल्य निर्धारण में सीमान्त लागत का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि उत्पादक उस समय तक वस्तु के उत्पादन में वृद्धि करता है, जबतक एक अतिरिक्त इकाई को बेचने से प्राप्त आय उस अतिरिक्त इकाई के उत्पादन लागत के बराबर नहीं हो जाता।

औसत लागत एवं सीमान्त लागत में संबंध :— अल्पकाल में औसत लागत एवं सीमान्त लागत का लागत-उत्पादन संबंध पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। औसत लागत एवं सीमान्त लागत के बीच स्थापित पाये बिन्दुओं को निम्नांकित रूप से व्यक्त किया जा सकता है:—

(1) जब औसत लागत गिरती है, तब सीमान्त लागत उससे कम रहती है।
(2) जब औसत लागत स्थिर रहती है, तब सीमान्त लागत भी उसके बराबर रहती है।
(3) जब औसत लागत बढ़ती है, तो सीमान्त लागत भी बढ़ती है।

Scanned with CamScanner